अमर उजाला

# सीओपीडी के जोखिम की समय रहते पहचान से नियंत्रण संभव

संवाद न्यूज एजेंसी

**ऋषिकेश।** क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज (सीओपीडी) के आधुनिक प्रबंधन पर एम्स ऋषिकेश में चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में राज्य के विभिन्न जनपदों से आए चिकित्सा अधिकारियों और स्टाफ नर्सों ने प्रतिभाग किया।

संस्थान के पल्मोनरी मेडिसिन विभाग, कॉलेज ऑफ नर्सिंग और राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में स्वास्थ्यकर्मियों को सीओपीडी की शीघ्र पहचान, रोकथाम, आधुनिक उपचार, पुनर्वास तथा आपातकालीन प्रबंधन से संबंधित नवीनतम ज्ञान और व्यावहारिक कौशल से सुसज्जित करना था।

कार्यक्रम में संबोधित करते हुए संस्थान की निदेशक प्रो. मीनू सिंह ने सीओपीडी तथा जोखिम कारकों की समय रहते पहचान और उनके नियंत्रण के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि प्रारंभिक अवस्था में रोग का निदान, बीमारी की प्रगति को रोकने के लिए प्रभावी कदम तथा प्राथमिक और द्वितीयक स्वास्थ्य सेवाओं के स्तर पर उचित हस्तक्षेप मरीजों के उपचार परिणामों में महत्वपूर्ण सुधार ला सकते हैं।

एम्स में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ करते मुख्य अतिथि स्रोत -एम्स

डीन एकेडमिक प्रो. सौरभ वार्ष्णेय ने सीओपीडी के उपचार में व्यक्तिगत और मरीज-केंद्रित दृष्टिकोण के महत्व को बताया। उन्होंने कहा कि अलग-अलग मरीजों में बीमारी की गंभीरता, जोखिम कारक, सह-रुग्णताएं तथा उपचार की आवश्यकताएं अलग हो सकती हैं। चिकित्सा अधीक्षक प्रो. सत्यश्री बालीजा ने स्वास्थ्यकर्मियों की क्षमता को व्यावहारिक एवं हैंड्स-ऑन प्रशिक्षण के माध्यम से मजबूत किया जा सकता है।

उन्होंने कहा कि बीमारी के अचानक बढ़ने की स्थिति (एक्यूट एक्ससर्वेशन) तथा अन्य आपातकालीन परिस्थितियों में प्रभावी प्रबंधन के लिए व्यावहारिक प्रशिक्षण के महत्व पर जोर दिया। कॉलेज ऑफ नर्सिंग की प्राचार्य प्रो. स्मृति अरोड़ा ने सीओपीडी के समग्र प्रबंधन में स्टाफ नर्सों की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में बताया। इस अवसर पर प्रो. गिरीश सिंधवानी, डॉ. रुचि दुआ, डॉ. पंकज कुमार सिंह, डॉ. राधेश्याम, डॉ. सौम्या खरे, डॉ. प्रखर शर्मा, डॉ. लोकेश कुमार सैनी, डॉ. राजकुमार, डॉ. मनेंद्र सिंह, डॉ. निधि कैले, डॉ. विशाल धीमान आदि मौजूद रहे।

हिन्दुस्तान

# सीओपीडी को लेकर एम्स में मंथन

**ऋषिकेश, संवाददाता।** एम्स ऋषिकेश में क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज के आधुनिक प्रबंधन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित हुआ। जिसमें राज्य के विभिन्न जनपदों से आए चिकित्सा अधिकारियों और स्टाफ नर्सों ने प्रतिभाग किया। प्रतिभागियों को सीओपीडी की रोकथाम, जोखिम कारकों की पहचान, स्पाइरोमेट्री, ऑक्सीजन थेरेपी आदि का प्रशिक्षण दिया गया।

बुधवार को एम्स में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ कार्यकारी निदेशक प्रो. मीनू सिंह ने किया। उन्होंने सीओपीडी तथा जोखिम कारकों की समय रहते पहचान और उनके नियंत्रण के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि प्रारंभिक अवस्था में रोग का निदान, बीमारी की प्रगति को रोकने के लिए प्रभावी कदम तथा प्राथमिक एवं द्वितीयक स्वास्थ्य सेवाओं के स्तर पर उचित हस्तक्षेप मरीजों के उपचार परिणामों में महत्वपूर्ण सुधार ला सकते हैं। डीन एकेडमिक प्रो. सौरभ वाष्णेय ने सीओपीडी के उपचार में व्यक्तिगत एवं मरीज-केंद्रित दृष्टिकोण के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि अलग-अलग मरीजों में बीमारी की गंभीरता, जोखिम कारक, सह-रुग्णताएं तथा उपचार की आवश्यकताएं अलग हो सकती हैं।

एम्स ऋषिकेश में बुधवार को सीओपीडी को लेकर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ कार्यकारी निदेशक प्रो. मीनू सिंह। • हिन्दुस्तान

मौके पर राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के असिस्टेंट डायरेक्टर डॉ. पंकज कुमार सिंह, एनएचएम उत्तराखंड के स्टेट प्रोजेक्ट मैनेजर डॉ. राधे श्याम, को-ऑर्डिनेटर डॉ. सौम्या खरे, पल्मोनरी विभागाध्यक्ष प्रो. गिरीश सिंधवानी, डा. रूचि दुआ, डॉ. प्रखर आदि मौजूद रहे।